सकारात्मक स्पंदन पुष्टि राधे

Vibrant Pushti

हे सनम! क्या रीत है प्रीत की यह जीवन में

जो मन खिंचाए तन तड़पाये आत्म प्रकटाये

मन के हर तरंग में केवल एक परम खिलाए

तन के हर रोम में केवल एक परम जगाए

आत्म के हर किरण में केवल एक परम बसाए

एक परम हर साँस में

एक परम हर दृष्टि में

एक परम हर रंग में

कान्हा ही ऐसा एक परम जो खिंचे खिलाए

गोविंदा ही ऐसा एक परम जो तडपे जगाए

कन्हैया ही ऐसा एक परम जो प्रकटाये बसाए

मन पुकारे माधवा माधवा

तन पुकारे साँवरिया साँवरिया

आत्म पुकारे कृष्णा कृष्णा

हे माधवा! मन सँवारे मन स्थिराये मन मिलाए

हे साँवरिया! तन शृंगारे तन नचावें तन मिलाए

हे कृष्णा! आत्म ब्रह्माए आत्म सूर्याए आत्म मिलाए

प्रीत प्रीत से मन माधवा में मुस्काये

प्रीत प्रीत से तन साँवरिया में महकाये

प्रीत प्रीत से आत्म कृष्णा में मधुराये

ऐसे घडो मेरा मन जो प्रीत ही प्रीत में मैं ही राधा

ऐसे घडो मेरा तन जो प्रीत ही प्रीत में मैं ही राधा

ऐसे घडो मेरा आत्म जो प्रीत ही प्रीत में मैं ही राधा

राधा मेरी स्वामिनी मैं राधा का दास

ऐसो जन्म जीवन दे दियो पल पल राधा साथ

"Vibrant Pushti"

प्रीत

अंश परम अंशी

साँस मन तन आत्म

आकाश धरती जल वायु अग्नि

हे परम अंशी ! ....

" Vibrant Pushti "

श्रीकृष्ण के विरह में गोपियों की दशा

जब भगवान रास में से सहसा अन्तर्धान हो गए तो उन्हें न देखकर व्रज युवतियों के हृदय में विरह की ज्वाला जलने लगी। श्रीठाकुर जी की मदोन्मत्त चाल , प्रेमभरी मुस्कान , विलासभरी चितवन , मनोरम प्रेमालाप , भिन्न-भिन्न प्रकार की लीलाओं और श्रृंगार रस की भाव-भंगियों ने उनके चित्त को चुरा लिया था। वे प्रेम की मतवाली गोपियाँ श्रीकृष्णमय हो गईं और फिर श्रीकृष्ण की विभिन्न चेष्टाओं और लीलाओं का अनुकरण करने लगीं। अपने प्रियतम की चाल-ढाल , हास-विलास और चितवन-बोलन आदि में श्रीकृष्ण की प्यारी गोपियाँ उनके समान ही बन गईं।

उनके शरीर में भी वही गति-मति , वही भाव-भंगिमा उतर आई। वे अपने को सर्वथा भूलकर 'श्रीकृष्ण स्वरुप' हो गईं। 'मैं श्रीकृष्ण ही हूँ' इस प्रकार कहने लगीं। वे सब परस्पर मिलकर ऊँचे स्वर से उन्हीं के गुणों का गान करने लगीं। मतवाली होकर एक वन से दूसरे वन में , एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी में जा-जा कर श्रीकृष्ण को ढूँढ़ने लगीं। वे पेड़-पौधों से उनका पता पूछने लगीं - हे पीपल , बरगद ! नंदनंदन श्यामसुंदर अपनी प्रेमभरी मुस्कान और चितवन से हमारा मन चुराकर चले गए हैं , क्या तुमने उन्हें देखा है ?

बहन तुलसी ! तुम्हारा हृदय तो बड़ा कोमल है। भगवान के चरणों में तुम्हारा प्रेम तो है ही , वे भी तुमसे बहुत प्यार करते हैं। क्या तुमने अपने परम प्रियतम श्यामसुंदर को देखा है ?

हे भगवान की प्रियसी पृथ्वीदेवी ! तुमने ऐसी कौन सी तपस्या की है कि श्रीकृष्ण के चरणकमलों का स्पर्श प्राप्त करके आनंद से भर रही हो। इस प्रकार गोपियां प्रलाप करने लगीं।

अब और भी गाढ़ आवेश हो जाने के कारण वे भगवन्मय होकर भगवान की लीलाओं का अनुकरण करने लगीं। इस प्रकार गोपियाँ मतवाली सी होकर अपनी सुधबुध खोकर एक दूसरे को भगवान श्रीकृष्ण के चरण-चिन्ह दिखलाती हुई वन-वन में भटकने लगीं।

श्रीकृष्ण के ध्यान में डूबी गोपियाँ यमुना जी के पावन पुलिन पर रमणरेती में लौट आईं और एक साथ मिलकर श्रीकृष्ण के गुणों का गान करने लगीं। सबने एक साथ , एक ही स्वर में श्रीकृष्ण के विरह में "गोपी गीत" गाया।

राजा परीक्षित ने शुकदेव जी से पूछा-कि सबने एक ही साथ कैसे एक ही गीत गाया ?

शुकदेव जी ने कहा - परीक्षित ! जब सब गोपियों के मन की दशा एक जैसी ही थी , सबके भाव की एक ही दशा थी , तब उन करोड़ो गोपियों के मुँह से एक ही विरह का गीत , एक साथ निकला , इसमें आश्चर्य कैसा ? उन अनेकों गोपियों ने अठारह यूथ बना लिए और उन्नीसवी गोपी स्वयं में ही यूथ था। इस प्रकार उन्नीस गोपियों के यूथ बन गए , गोपी गीत में भी उन्नीस श्लोक ही हैं।

श्रीराधारमणाय समर्पणं

प्रीत की धारा

जो बहे तो गंगा हो जाये

जो दौड़े तो यमुना हो जाये

जिस जिस से छुये

वो सागर हो जाये

वो नैनामृत हो जाये

गिरे ऐसे जो हर धारा बूँद हो जाये

बरसे ऐसे जो हर बूँद आग हो जाये

आग से तन मन धन जले

खींच खींच कर साँस ऐसी सुलगी

इंतेज़ार का नैन तरसा

तड़प तड़प कर दिल जला

ऐसी आग जो डूबे वो दीवाना

ऐसी जाग जो छुआ वो परवाना

कहो कान्हा तुम क्या और हम क्या?

"Vibrant Pushti":
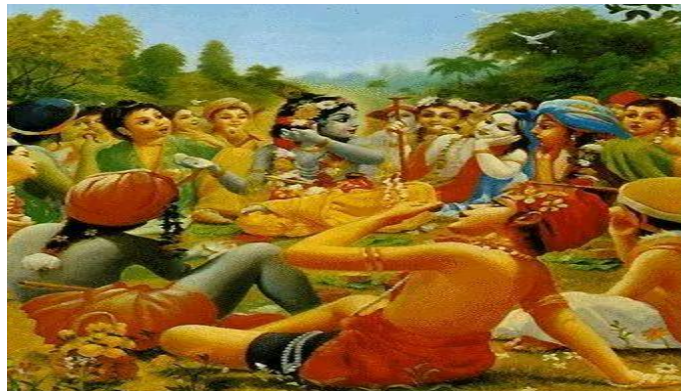
हे पलक!

तु खुलने की जल्दी न कर

मेरे साँवरिया को सपनों में आना है

हे पलक!

तु जागने की मति न कर

मेरे साँवरिया को मुझमें जागना है

हे पलक!

तु उठने की बेचैनी न कर

मेरे साँवरिया को मुझमें रुकना है

हे पलक!

तु आकुल व्याकुल न हो

मेरे साँवरिया को मुझमें ठहरना है

हे पलक!

तु उघड़ने की कोशिश न कर

मेरे साँवरिया को मुझमें बसना है

हे पलक!

तु फरफराने की विधि न कर

मेरे साँवरिया को मुझमें सँवरना है

हे पलक!

तु संभलने की नीति न कर

मेरे साँवरिया को मुझमें खोना है

हे पलक!

तु सपनों से तिलमिला न हो

मेरे साँवरिया को मुझमें स्थिरना है

हे पलक!

तु विचारों से बेझिझक न हो

मेरे साँवरिया को मुझमें टहलना है

हे पलक!

तु मन से बेकरार न हो

मेरे साँवरिया को मुझमें आराधना है

हे पलक!

तु तेरे तन से कोई क्रिया न कर

मेरे साँवरिया को मुझको मुझसे लूटना है

"Vibrant Pushti"

"राधा" को गोपि भाव

"कृष्ण" को रसो वैः सः कहते है।

क्या है यह माधुर्य भाव और शरणागत भाव?

श्री राधा! "राधा" "राधा"

श्री कृष्ण! "कृष्णा" "कृष्णा"

क्या है यह "राधा"

क्या है यह "कृष्ण"

डूबना है तो राधा के नयन में

खोना है तो कृष्ण के रंग में

हे राधा!

हे कृष्ण!

"Vibrant Pushti"

मन की झँखनाओ का झुलन बनवाऊं

तन की तमन्नाओ का तोरण बंधवाऊं

मेरा श्याम हिंडोले झूले

मेरा कान्ह झुलनिये झूले

टुहुक टुहुक तरुवर गाजे

ढुरर ढुरर बदलियाँ गरजे

धरती गाये मल्हार

रिमझिम रिमझिम अमी बूँद बरसे

मन की वडवाई अंबर को चूमे

तन की तरुणाई तरंगों से झूमे

मेरा घनश्याम हिंडोले झूले

मेरा गोविंद झुलनिये झूले

गुलमहोर निकुंज सजाये

जुईमोगरा अंग भराये

वनस्पति बिखरे हरियाल

झुनुन झुनुन झरना धार बरसाय

टिमटिम तारलियाँ रंग उड़ाय

नाचे मयूर गाये दादुर

मेरा साँवरिया हिंडोले झूले

मेरा गोवर्धन झुलनिये झूले

"Vibrant Pushti"

उनकी तिरछी नजर ने क्या कर दिया

न मेरी नजर उठ नही सकती

न मेरी पलक खुल नही सकती

एक तिनका छू गया

और आग लग गई

साँसे उलझ उलझ कर चलने लगी

धड़कन धड़क धड़क कर दौड़ने लगी

एक किरण खिल उठा

और सुनहरे छा गया

उनकी तिरछी नजर ने क्या कर दिया

मन उछल उछल कर तरसने लगा

तन इंतजार करके तड़पने लगा

एक सुरखी महक की छू गई

और कँवल खिल उठा

उनकी तिरछी नजर ने क्या कर दिया

"Vibrant Pushti"

हर बूँद में रीत भरी है

बूँद बूँद परिवर्तिता है

जिसको छुये बूँद का है

जिसको पीये बूँद का है

बूँद से पहचाना बूँद होना

बूँद से बूँद एक धारा होना

जैसे वसुंधरा का सागर

जैसे मन जीवन की माँ

क्षण क्षण संस्कृत

घड़ी घड़ी अमृत

बूँद बूँद प्रीतामृत

ओ! मेरे परम प्रिये परमात्मा!

तु हर रीत से है मेरा प्रियतम!

"Vibrant Pushti"

बादलों को टकराके नैनों में ज्योत जाग उठी

तेरे मुखड़े की अदा पर हलकी सी लहर दौड़ उठी

झुल्फ़े लहराने लगी, पलके फ़रफराने लगी

तेरे होठों से पुकार उठने लगी

साँसों की कसम

धड़कन की कसम

टपक टपक बूँद गिरते तन मन में आग सुलग उठी

तेरे आँचल की उड़ान से रोम रोम प्यास तड़प उठी

मेरी प्रीत गा उठी

लज्जा की कसम

छुआ छुये की कसम

" Vibrant Pushti "

श्याम श्याम संग ऐसी जुड़ी

उजली श्याम रंग हो भयी

श्याम श्याम रंग ऐसी रंगी

मन श्याम श्याम सूर गा ने लगी

श्याम श्याम सूर गा ने लगी

तन श्याम श्याम पुरुषार्थ करने लगी

श्याम श्याम पुरुषार्थ करने लगी

धन श्याम श्याम अर्चन करने लगी

श्याम श्याम अर्चन करने लगी

जीवन श्याम श्याम चरित्र बसाने लगी

श्याम श्याम चरित्र बसाने लगी

पुष्टि प्रीत श्याम दर्शन अंतरंग होने लगी

श्याम दर्शन अंतरंग होने लगी

आत्म श्याम श्याम परम तत्व पाने लगी

श्याम श्याम परम तत्व पाने लगी

श्याम श्याम से एकात्म भयी

श्याम श्याम से श्यामा हो गई

श्यामा श्यामा से श्याम हो गई

यही रीत है श्याम प्रीत की

यही सृष्टि है श्याम पुष्टि की

" Vibrant Pushti "
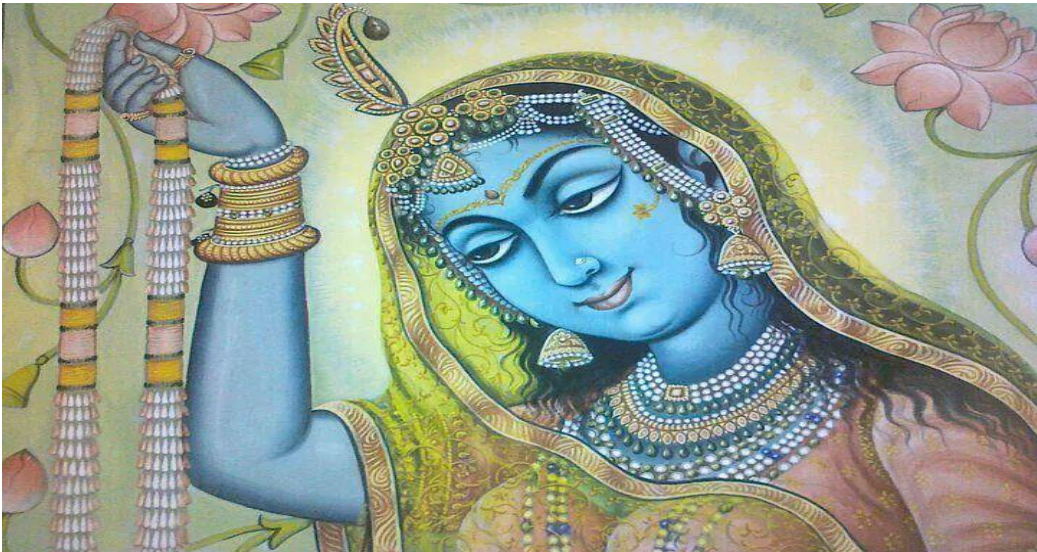
जुगनी रात
टिमटिमाती रात

दीपक रात

उर्जित रात

उजली रात

जागती रात

भड़कती रात

जलती रात

विरह रात

अँसुवन रात

जपती रात

खोजती रात

उठती रात

ढूँढती रात

आह रात

पुकारती रात

ओझल रात

तृष्णा रात

अपलक रात

इंतेज़ार रात

कैसी कैसी रात

भिन्न भिन्न रात

भक्त - प्रियतम - ज्ञानी - तपस्वी - सिद्ध - अभद्र - अमानवीय - आत्मीय - विरही - अघोरी - आचार्य

ऐसी है रात

ऐसी है फरियाद

जो समझे उन्हें ही स्पर्शे

स्पर्शते स्पर्शते लूट जाती है राते

तरसते तरसते बह जाती है राते

" Vibrant Pushti "

कभी देखा है

अपने पलकों में क्या छिपा है

अपने नयनों में क्या छिपा है

अपने साँस उच्छ्वास में क्या छिपा है

अपने अधरों में क्या छिपा है

अपने मुखड़े में क्या छिपा है

अपने झुल्फों की मांग में क्या छिपा है

अपने माथे की पघडी में क्या छिपा है

अपने भाल के तिलक में क्या छिपा है

अपने कर्णो के झुमखे में क्या छिपा है

अपने उंगली के अंगूठी में क्या छिपा है

अपने बाहों के बाजुबंध में क्या छिपा है

अपने हाथों के कंगना में क्या छिपा है

अपने पाँवो की पायल में क्या छिपा है

अपने तन के आँचल में क्या छिपा है

अपने मन के तरंग में क्या छिपा है

अपने धन के विश्वास में क्या छिपा है

अपने कर्म के पुरुषार्थ में क्या छिपा है

अपने धर्म की संस्कृति में क्या छिपा है

अपने जीवन के कर्म में क्या छिपा है

अपने जन्म के सत्य में क्या छिपा है

"Vibrant Pushti"

कभी ये नैना कुछ पुकारती है

पर कोई सुनता नही है

कभी ये मुखडा कुछ कहता है

पर कोई सुनता नही है

कभी ये साँसे कुछ सुनाती है

पर कोई सुन नही सकता है

कभी ये धड़कन कुछ गुनगुनाती है

पर कोई सुन नही रहता है

कभी ये दिल कुछ गाता है

पर कोई सुनने के आदि नही है

क्यूँकी मन गाता है,

क्यूँकी मन पुकारता है,

क्यूँकी मन गुनगुनाता है,

क्यूँकी मन कहता है,

जिसका मन ही सबकुछ करता रहता है

उनकी साँसे कैसे सुन पायेगा?

उनकी धड़कन कैसे गुनगुनायेगा?

उनकी नैना कैसे पुकारायेगा?

उनका दिल कैसे गायेगा?

"Vibrant Pushti"

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ देते जाते है

कुछ कहते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ स्पर्शाते जाते है

कुछ धड़काते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ भिगोते जाते है

कुछ जगाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ बहाते जाते है

कुछ चमकाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ थरथराते जाते है

कुछ ठंड़ठंड़ाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ नचाते जाते है

कुछ गिराते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ झुलाते जाते है

कुछ हिलाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ जीतते जाते है

कुछ हारते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ खोते जाते है

कुछ पाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ पिलाते जाते है

कुछ तरसाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ मिलाते जाते है

कुछ बिछड़ाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ   जाते है

कुछ   जाते है

"Vibrant Pushti"

यमुनाकी खल खल धारा, आसमानके टीम टीम करते सितारें कोई संकेत दे रहे थे कि कुछ होने वाला है।

वायु मधुर बहे रहा था और पेड़ के पत्तो से आसपास की धरा को जगा कर कहे रहा था, कुछ होने वाला है तो आप सर्वे अपने आप को कुशल रखना कोई तुम्हारी पास आ रहा है।

इतने में पंखी का कलरव शोर करने लगा, उन्होंने कोई ऐसी तरंग सुनी जो तरंग में किसीका इंतेज़ार था।

धीरे धीरे वह तरंग छम छम के झंकार में परिवर्तन हो गयी, वही धरा और वही यमुना निकुंज के पास आ कर वह झंकार ठहर गयी।

आसपास नीरव शांति थी, यमुना का जल उछल उछल कर वो धरा की ओर लहराने लगे, शायद वह छम छम सूर जगाने वाले के चरण स्पर्श करलूँ।

वह पेड़ भी अपनी शाखाये झुका झुका कर अपने आप को इतना नीचा करने लगे कि शायद वो छम छम वाले के आंचल को छू लू।

दोनों की बात न बनी क्यूँकी छम छम के सूर जो जगाते थे वह एक ऐसी निकुंज के कोने में छुप गया कि न किसीकी नजर पड़े या न कोई आहट जाग जाये।

समय भी अपने आप को भूल गया जैसे वह वायु, वह यमुना की धारा, वह निकुंज की धरा, टीम टिमटिमाते सितारें और जो आया था वह भी।

पर जाग रहा था वह पेड़ जो निकुंज से जुड़ा था, उन्होंने अपनी नजर दूर दूर तक फिरायी पर कोई नजर न आया, वह सोचने लगा - इतनी रात को यह छम छम के सूर ऐसे नही बजते? कुछ तो होगा ही!

इसी सोचमें अपने आप को खो रहा था इतने में - कोई पुकार सुनी......

पेड़ चमक गया, और जो दिशा से आवाज आयी थी वो ही दिशा तरफ अपनी नजर सतेज करदी। इतने में फिरसे वह पुकार उठी - रा.......

पेड़ अपने पत्ते की हलचल से सही सुन न पाया पर इतना समझ पाया कि कोई आ रहा है और वह यह छम छम के जो सूर जगाये थे उन्हें ढूंढते ढूंढते ही यहाँ आयेगा।

यहाँ जो छम छम के सूर उठे थे उन्होंने यह पुकार सुनली और वह वोही पुकार की तरफ अपने कदम बढ़ाने लगे - यह बढ़ते और दौड़ते हर कदम ने छम छम के सूर को सरगम कर दिया और झंकार - छम छम छम छम की गूँज में परिवर्तन हो गया।

यमुना धारा भी समझ गयी, वायु भी समझ गया, पत्ते भी समझ गये, धरा भी समझ गयी, टिमटिमाते सितारें भी समझ गए और समय भी समझ गया कि यह कौन है?

यमुना का जल आकुल व्याकुल होने लगा, टिमटिमाते सितारें आसमान में जोर जोर से घूमने लगे, वायु अपने आपको झंझावात में परिवर्तन करने लगे और पत्ते अपने आपको शाखासे तूट तूट कर बिखरने लगे, धरा अपनी हर रज तीतर बितर करने लगी इतने में वह पुकार जो पेड़ ने अधुरप सी सुनी थी वह उनके बिलकुल निकट आ गयी और सबने सुनी - राधा!

ओहह! सर्वे थंभ गये, स्थिर हो गये! यमुना अपनी आकुल व्याकुलता छोड़ दी, टिमटिमाते सितारें रुक गए, वायु शांत हो गया, पत्ते नवचेतन होने लगे, धरा एक मेकमें घुल गयी और पेड़ सहसा हो गया।

सर्वत्र शांत हो गया, सब अपने धैर्य में छुप गये और इंतज़ार करने लगे कोई आत्मीय धन्यता और स्पर्शता का, इतने में वह पुकार की गूँज सुनायी "राधा" "राधा" 🌷🌷🌷

और वह छम छम के सूर एक दूजे के निकट आने के लिए अपनी हर आंतरिक और बाह्यी तीव्रता को उत्तेजित करते हुए दौड़ रहे थे।

छम छम के सूर रुक गए, पर वो पुकार का आंतर नाद आ रहा था, शायद छम छम ने सोचा होगा की देखु तो सही वो पुकार कितने रीति से द्रवित होगा, छम छम की अठखेलिया की मधुरप दोनों को कितनी गहराई से बांधते है?

"Vibrant Pushti"

यमुना सा मोहन

व्रज रज सी राधा

राधा बसी वहाँ गोवर्धन बसा

यमुना बसी वहाँ वृंदावन बसा

इसीलिए तो

कहते है

गोकुल बरसाना राधा कान्हा

नंदगाँव मथुरा श्याम श्यामा

यही रीत है प्रीत आत्म की

जो जन्म जन्म जिये हर ब्रह्मांड की

राधा बसी वहाँ गोवर्धन बसा

अर्थात तुमने इतना स्मरण करवाता हूँ कि श्री गोवर्धन की रचना श्री प्रभु ने श्री राधा के कहने से रची थी

पता नही ये सब अक्षर और शब्द कैसे जुड़ जाते है

जब तक जी रहा हूँ

तेरा इंतज़ार करता हूँ

कभी तु छुपता है

बादलों जंगलों में

कभी मैं ढूंढता हूँ

कहीं गलियाँ झोपड़ियों में

कभी तु छुपता है

कजरारे नैनों में

कभी मैं खोजता

आसमान के तारों में

कभी तु छुपता है

सागर की गहराई में

कभी मैं तराशता

उच्छवास की आह में

कभी तु छुपता

कहियों के आँचल में

कभी मैं ढूंढता

अपलक न झुकते नैनों में

"Vibrant Pushti"

ये एक ऐसा एहसास है

ये एक ऐसा विश्वास है

ये एक ऐसा आत्मीय गूँज है

ये एक ऐसा विरह दर्द है

ये एक ऐसा इंतेज़ार है

ये एक ऐसा अनुभव है

ये एक ऐसी पूजा है

ये एक ऐसी साधना है

ये एक ऐसी आंतरिक तरंग है

ये एक ऐसा श्रृंगार है

ये एक ऐसा धड़कने चुभन है

ये ऐसी साँसों की धारा है

ये ऐसा आत्मीय सर्जन है

ये ऐसा मधुर प्राकट्य है

"Vibrant Pushti"

झुलन झूले होले होले प्रियतम

मन मोरा झुलाये तन मोरा झुलाये

झुलाये मोरे अंतरंग तरंगे

झुलन झूले होले होले प्रियतम

"Vibrant Pushti"

तुम्हें पढ़ता हूँ

तो तेरी याद सताती है

तुम्हें याद करता हूँ

तो तेरा भाव पुकारता है

तुम्हें पुकारता हूँ

तो तु कहीं दूर चली जाती है

कैसी है यह रीत राधिके

प्रीत करें तो कैसी करें?

"Vibrant Pushti"

साँस भी कभी अपनी गहराइयों थामता है

अधर भी कभी अपनी चिपचिपायी मौन धरता है

नैन भी कभी अपनी पलके झुकी झुकी बरसाता है

धड़कन भी कभी अपनी मर्यादा संकोचता है

मन भी कभी अपनी उड़ान रुंधता है

तन भी कभी अपनी उतेजना दर्दता है

क्या यही ही प्रीत की विरहता है?

कुछ होता है।

"Vibrant Pushti"

प्यासे की प्यास बढ़ाओ

विरह की रीत जतावो

तुम्हारे है तो तुमसे ही सीखेंगे

नही हमें आता आजमाना

क्यूँकी हम तेरे दीवाने है

"Vibrant Pushti"

क्या है प्यार

कभी साँस थम जाती है

कभी स्वर रुक जाते है

कभी धड़कन जोर करती है

कभी दिल दबता जाता है

कभी मन खो जाता है

कभी तन बरसता है

नयनों से आवाज उठती है

कर्णो से आहटे थप थपाती है

ओहह!

"Vibrant Pushti"

तुम्हारी याद और श्री प्रभु दर्शन मुझे तड़पाता है

तड़प यह साँस के पल पल की

तड़प यह नजर के इंतजार की

कैसी है यह असर सिसक सिसक की

क्या है रुख कोई प्रीत की

कुछ तो जगादे हे! कुछ तो जगादे

यह गर्म गर्म साँसों से

यह तरस तरस निगाहों से

उठता है कुछ धुआँओ सा

यह सिसक सिसक सूर विरह की

यह रुक रुक की याद मिलन की

तडपता है कुछ परवाना सा

कुछ तो जतादे हे! कुछ तो जतादे

"Vibrant Pushti"

जन्म लिया है तो कृष्ण होना ही पड़ेगा

अंश है ही अंशी के तो कृष्ण होना ही पड़ेगा

प्रीत लूटानी है तो कृष्ण होना ही पड़ेगा

संसार में आये है तो कृष्ण लीला समझनी ही पड़ेगी

प्रकृति में बसे है तो कृष्ण के लिए परिवर्तन करना ही पड़ेगा

राधा के चरण छूने ही है तो कृष्ण होना ही पड़ेगा

जीवन रीत ही सर्वे की है तो कृष्ण अवतार पहचानना ही पड़ेगा

हे कृष्ण!

"Vibrant Pushti"

ये कैसा ख्याल है

जो न मन को गंवारा नही

जो न नैन को गंवारा नही

जो न धड़कन को गंवारा नही

जो न साँस को गंवारा नही

जो न दिल को गंवारा नही

जो न प्रीत को गंवारा नही

है यह आत्मीय पुष्टि प्रीत का थोड़ा स्पर्श

जो टूट न जायें वह गंवारा है मुझे

यही तो है मेरे जन्मों जन्म की प्रीत

जो छूट न जाये वह गंवारा है मुझे

न करों जुल्म इतना कि न मैं रहूँ या न रहे मेरी प्रीत

नही तो न कोई किसीको राधा समझेगा न कोई किसीको कृष्ण

हे मेरा जीवन!

"Vibrant Pushti"

योगिनी मैं बन जाऊँ साँवरिया तोरी

योगिनी मैं बन जाऊँ साँवरिया तोरी

योगिनी बन कर वन वन डोलू

तेरे ही गुन गाउँ

नित उरकी कंपित वीणा पर

तेरा ध्यान लगाऊँ

योगिनी मैं बन जाऊँ साँवरिया तोरी

यमुना बन कर गोवर्धन सिंचु

व्रजरज ही जगाऊँ

जीवन परिभ्रमण पुष्टि कर

पुष्टि पंथ प्रकटाऊँ

योगिनी मैं बन जाऊँ साँवरिया तोरी

योगिनी मैं बन जाऊँ साँवरिया तोही

"योगिनी एकादशी" सर्वे पुष्टि जनो को प्रणाम

"Vibrant Pushti"

प्रीत का हर दर्द मधुर है

प्रीत की हर अदा दिले जिगर है

जिसका हर खेल प्रीत लीला है

जिसकी हर रीत प्रीत कुरबानी है

"Vibrant Pushti"
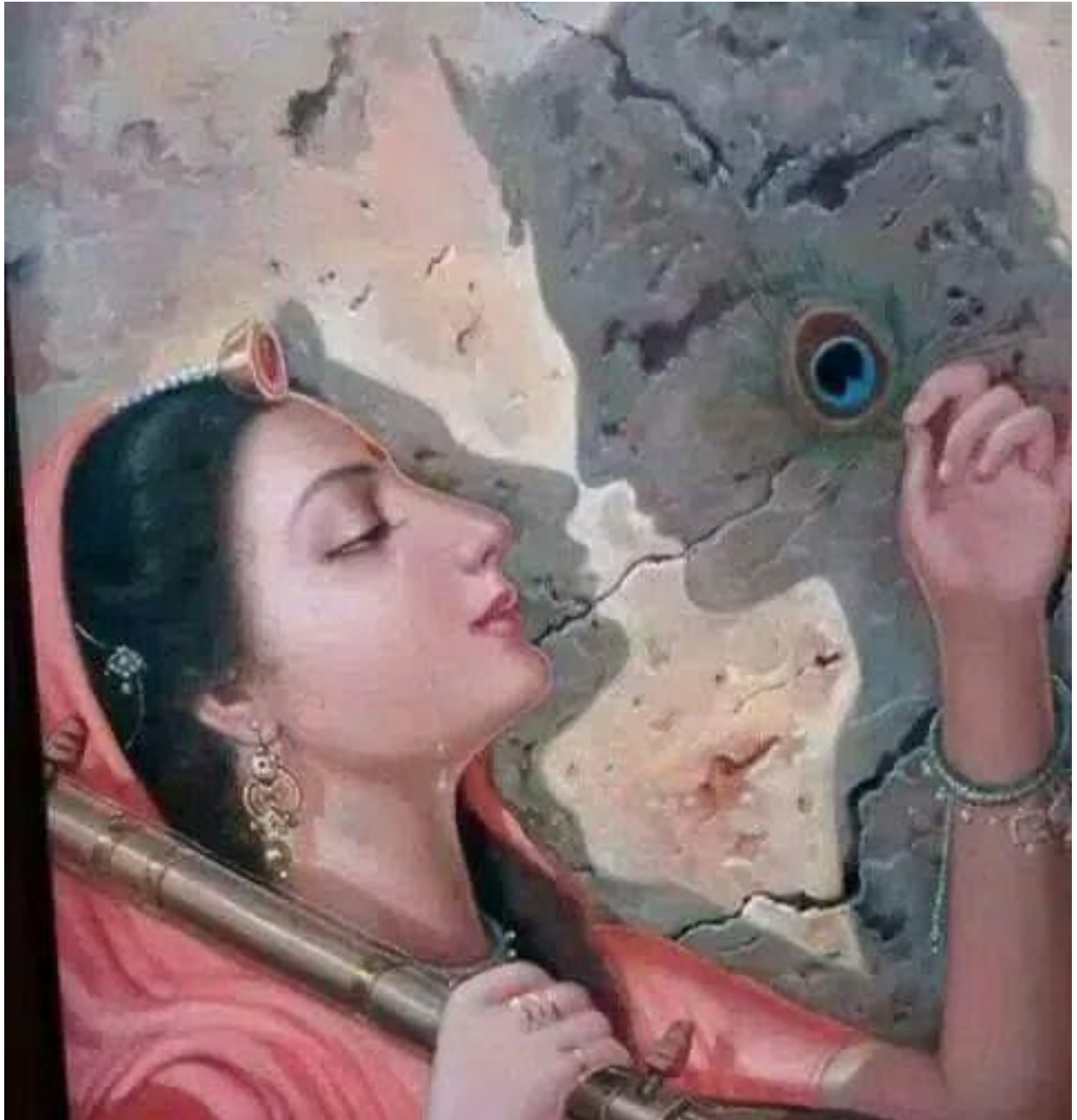
क्या है प्रीत?

क्या करना होता है?

न क्षण समझ सकते है,

न पल समझ सकते है,

न संबंध समझ सकते है,

न बंधन समझ सकते है,

क्या होना होता है?

न जीव हो सकते है,

न मानव हो सकते है,

न आत्म हो सकते है,

न ब्रह्म हो सकते है,

ओहह! तो क्या प्रकटाना है?

"Vibrant Pushti"

तुझे चाहा

तुझे पूंजा

तुझे कुरबाया मैंने

बस यही खता है मेरी

और खता क्या है?

मुझे मेरा प्यार मिला

हर एक बूंद से मुझे

पुष्टि पुष्टि शीतलता पायी

"Vibrant Pushti"

अरे कृष्ण! क्या ढूंढते हो?

मैं कब से देख रहा हूँ, तुम इधर उधर - कभी ऊपर कभी नीचे, कभी बायें कभी दायें, तो कभी खड़े हो कर कभी बैठ कर, कभी एक नजर से कभी नैनों में बूंद भर कर, कभी लपाते कभी छुपाते, कभी गुनगुनाते कभी मौन धारण कर, क्या क्या करके क्या ढूंढते हो?

कही घडीओ से मैं भी टटोलता रहा सोचता रहा, आश्चर्य से उत्सुक होता हुआ घूमता रहा कि क्या ऐसा नही मिल रहा है कृष्ण को, जो कब का खोजता रहा है।

अपने सखा की आवाज सुन कर कृष्ण उदास हो गये, चहरे से नूर उड़ गया और गमगीन सी छा गई।

क्या कहे, क्या बोले!

कृष्ण क्या कर रहे है?

सखा ने फिर से पूछा - कृष्ण! क्या है?

कृष्ण ने न अपना मौन तोड़ा और न कोई प्रतिक्रिया व्यक्त की, न कोई भाव जताया न कोई संकेत दर्शाया।

अपनी धून में ही सखा की ओर एक ही नजर से उन्हें देख ने लगे।

सखा अचंबित हो कर फिर से कहा - कृष्ण! क्या हुआ? क्यूँ मौन है? क्यूँ ऐसा कर रहा है? कुछ हुआ है?

सखा ने प्रश्नों की झडी बरसादी

पर

न कोई प्रत्युत्तर न कोई प्रतिसाद, केवल खुद में खोया था एक आंतर प्रतिवेद पुकार घूट घूट कर।

सखा से रहा न गया और इधर उधर, उपर नीचे नजर घुमा कर बोल उठा - कृष्ण! यहाँ ऐसा तो कुछ है ही नही तो फिर तुम किसे ढूंढ रहे हो, क्या ढूंढ रहे हो?

सखा बैचैन हो कर सोचते सोचते - यह तो कान्हा है और उनकी हर रीत निराली है - सोचते सोचते चल पड़ा।

इधर कान्हा फिर अपनी धून में खो गया।

ऐसा खोया की वह अपनी बंसरी की मोतियन फूमते से डाली को सजाने लगा, अपने सिर के मयूर पंख पत्ते में पिरोने लगा, अपनी व्यजंती माला को पौधों पर बांधने लगा, टगुर टगुर देख कर वो खुद भी कभी हँसने लगता तो कभी आँसू बहाने लगता।

इतने में उन्हें याद आया अपना खेस - तुरंत उन्होंने पौधें के थड को लिप्टाके अपने दोनों हस्त से पहनाने लगा, दौड़ के दूर जा कर निहारने लगा - कैसी है रे मेरी....... और वह गिर पड़ा।

गिरते ही वो पौधें से एक हरा पत्ता उड़ कर कान्हा के उपर आ पड़ा, पत्ते की लगी से कान्हा को मधुर स्पर्श अनुभूत होने लगा। कान्हा ने वह पत्ता अपनी बांसुरी वादक उँगली से पकड़ा और जैसे पत्ते को अपने नयनों में बसाने लगा इतने में ही वह पत्ते में एक आकृति नजर आयी और कान्हा झबक गया, ओहह! पत्ते के मध्य में गुलाबी रंग की कोई छींट दर्शने लगी और कान्हा व्याकुल हो गया।

"Vibrant Pushti"

यही तो पीना है - प्रेम रस

जो पीते पीते हर रोम श्याम हो जाये।

मैं श्यामा तु श्यामलिया हो जाये।

मैं राधा तु कृष्ण हो जाये।

मैं गोपि तु गोपाल हो जाये।

मैं मोहनिया तु मोहन हो जाये।

मैं साँवरी तु साँवरिया हो जाये।

"Vibrant Pushti"

मुझे श्री प्रभु प्रेम पीना है

कैसे?

जैसे मैं उनकी हो जाऊं

जैसे मैं उनमें खो जाऊं

जैसे मैं उनसे जुड़ जाऊं

जैसे मैं उनमें डूब जाऊं

जैसे मैं उनसे लड़ जाऊं

जैसे मैं उनमें विरह जाऊं

जैसे मैं उनसे लूट जाऊं

जैसे मैं उनमें मिट जाऊं

जैसे मैं उनसे लिपटा जाऊं

जैसे मैं उनमें पगला जाऊं

जैसे मैं उनपे मरता जाऊं

जैसे मैं उनमें खिंचता जाऊं

जैसे मैं उनसे संवरता जाऊं

जैसे मैं उनमें भटकता जाऊं

जैसे मैं उनको गाता जाऊं

जैसे मैं उनमें रंगाता जाऊं

जैसे मैं उनसे तडपता जाऊं

जैसे मैं उनमें झूमता जाऊं

तुम्हें जो देख लेगा

वो हो जायेगा तुम्हारा

ये तिरछी नैन तुम्हारे

नजर से दीवाना होगा

तुम्हें जो देख लेगा

ये बिखरे झुल्फ़ तुम्हारे

लहराये हवा के झोंके से

लिपटाये मुख से मेरे

मुझे सदा लूट लेगा

तुम्हें जो देख लेगा

वो हो जायेगा तुम्हारा

तुम्हें जो देख लेगा

ये अधर के इशारे

मचलाये तन मन मेरे

पीये प्रीत तेर दिलकी

घूट घूट कर मिटेगा

तुम्हें जो देख लेगा

वो हो जायेगा तुम्हारा

तुम्हें जो देख लेगा

"Vibrant Pushti"

सोचता है सोचता ही रहता हूँ

कौन है कृष्ण? कैसा है कृष्ण?

कहाँ है कृष्ण? क्यूँ है कृष्ण?

किसने अपनाया कृष्ण?

किसने प्रकटाया कृष्ण?

किसने जताया कृष्ण?

किसने कहा कृष्ण?

किसने जगाया कृष्ण?

किसने दर्शाया कृष्ण?

किसने स्पर्शाया कृष्ण?

किसने मिलाया कृष्ण?

किसने तड़पाया कृष्ण?

किसने विरहया कृष्ण?

हे कृष्ण! हे कृष्ण! कृष्ण कृष्ण!

हा कृष्ण! हा कृष्ण! कृष्ण कृष्ण!

"Vibrant Pushti"

ये नैनन में ऐसा क्या है,

जो कुछ जगाने के लिए पल में अपलक और पल में कहीं बार खुल बंध होता है?

ये नैनन में ऐसा क्या है,

जो कुछ जिज्ञासा के लिए कहीं कहीं घुमके अटकलें करती है?

ये नैनन में ऐसा क्या है,

जो कुछ ढूंढती ढूंढती अपने आप में खो जाती है?

ये नैनन में ऐसा क्या है,

जो सदा कोई इंतजार ही होता रहता है?

ये नैनन में ऐसा क्या है,

जो सारे जीवन धारा उनमें डूबी रहती है?

"Vibrant Pushti"

हे कृष्ण!

तु भी ऐसा दर्द से खुद का इलाज नहीं कर सकता
तु भी ऐसा दर्द से खुद को इतना जलाता है
तु भी ऐसे दर्द से खुद को अनगिनत वेदना में तडपता है
तु भी ऐसे दर्द से खुद से खुद की पहचान खो देता है
तु भी ऐसे दर्द से खुद से खुदा की रुसवाई से आहे भरता है
तु भी ऐसे दर्द से खुद से खुद को बरबादता है
तु भी ऐसे दर्द से खुद से दिल्लगी की तन्हाई में डुबाता है
तु भी ऐसे दर्द से खुद से खुद को लुटाता है
तु भी ऐसे दर्द से खुद को खुद से धृजता है
तु भी ऐसे दर्द से खुद को यह धरती, यह आसमान, यह सागर, यह सूरज, यह वायु से सलगता है
तु भी ऐसे दर्द से खुद को इंतज़ार में भटकाता है
तु भी ऐसे दर्द से अपने आप को विरहता में गुनगुनाता है
तु भी ऐसे दर्द से कुछ लिखता ही रहता है
तु भी ऐसे दर्द से तन मन और धन को भूलता है
तु भी ऐसे दर्द से अपने आपको पुकारता रहता है

यही तो एक सत्य है,
जिसमें जिसको तरछोडा है
जिसमें जिसको निचोड़ा है
जिसमें जिसको नचाया है
जिसमे जिसको रुलाया है
जिसमें जिसको सहा है
जिसमें जिसको बिकाया है
जिसमें जिसको धोकाया है
जिसमें जिसको भरमाया है

पर हे मेरे प्रीत मित्र!
यही तो एक ऐसा आनंद सत्य है जिसने जिसने उन्हें स्पर्शा उन्होंने कुछ पाया है।

हे कृष्ण! तो तु मेरे लिये कुछ नहीं कर सकता।

"Vibrant Pushti"

"मोहन"

मोहे भूल न जाना हे कन्हैया!

मोहे छोड़ न देना हे कन्हैया!

न तो यह मोह को मारता है पर मोहे उनकी ओर खींचता है

मोहे अपना बनाता है

मोहे अपना करता है

मोहे अपना समझता है

मोहे अपना अपनाता है

यही तो है मोहन जो केवल और केवल मेरे है

यही तो है प्रीत धारण जो केवल मुझ पर न्योछवर करते है

यही तो है आनंद जो केवल मुझ पर लूटाते है।

यही तो है सौंदर्य जो केवल मुझ पर सजाते है।

ओ मेरे मोहन! मेरे तन मन धन के दामन।

तु है तो ही मैं हूँ, मेरे जीवन का सृजन ।

"Vibrant Pushti"

निकुंज में पधारे

श्री नाथ प्यारे प्यारे

श्री नाथ प्यारे प्यारे

श्री वल्लभ के दुलारे

निकुंज में पधारे

श्री नाथ प्यारे प्यारे

गोवर्धन पर्वत पधारे

गौ गोपि से गौचारण करे

नटखट नटखट लीला रचाये

गिरिराज प्यारे प्यारे

गिरिराज प्यारे प्यारे

गौपालों के रखवाले

निकुंज में पधारे

श्री नाथ प्यारे प्यारे

श्री यमुनाजी तट बिराजे

बंसीवट पर चिर चुराये

गोप गोपि संग रास रचाये

श्याम प्यारे प्यारे

श्यामा के प्यारे प्यारे

प्रियतम हो हमारे

निकुंज में पधारे

श्री नाथ प्यारे प्यारे

श्री नाथ प्यारे प्यारे

पंकज के पुष्टि प्रिये

निकुंज में पधारे

श्री नाथ प्यारे प्यारे

"Vibrant Pushti"
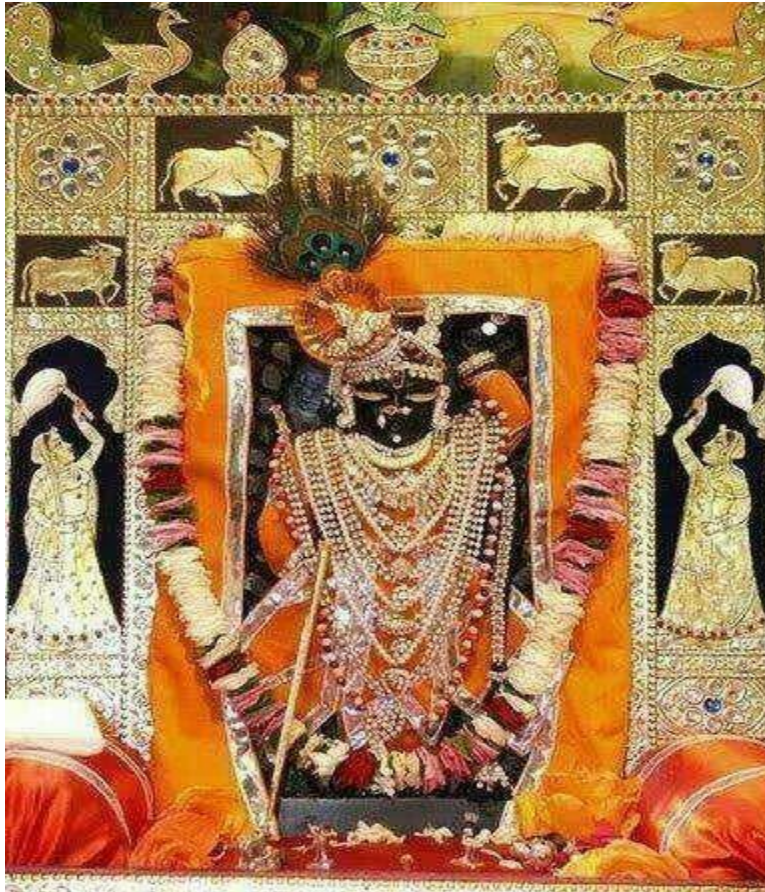
"कन्हैया" कन् + हैया = कन्हैया

कन् अर्थात कहाँ नहीं।

कन् अर्थात कण कण में।

कन् अर्थात कोई भी अवकाश।

कन् अर्थात कोई भी साँस।

हैया - प्रीत का मूल स्थान।

हैया - विश्वास का मूल स्थान।

हैया - धारणा का मूल स्थान।

हैया - पवित्र गति का मूल स्थान।

हैया - पुरुषार्थ का मूल स्थान।

हैया - प्रिये का मूल स्थान।

कन्हैया! कितना माधुर्य है - कहने में

कन्हैया! कितना वात्सल्य है - तन मन में

कन्हैया! कितनी तीव्रता है - स्मरण में

कन्हैया! कितनी शुद्ध गूँज़ है - आंतरिक पुकार में

कन्हैया! कितनी अनोखी स्वर सरगम है - सुनने में

कन्हैया! कितना अलौकिक शब्द है - लिखने में

कन्हैया! कितना धडकता भरा आनंद है - सीने में

कन्हैया! कितना अद्वैत है - परम - पर एकात्म में

कन्हैया! कितनी प्रीत उत्सती धारा है - आत्म में

कन्हैया! कितनी विरहता है - साँसों की आह में

कन्हैया! कितनी आतुरता है - तन में

कन्हैया! कितनी व्याकुलता है - विरहाग्नि में

कन्हैया! कितनी एकात्मता है - आत्म परमात्मा मिलन में

कन्हैया! कितना समर्पण है - तन मन धन में

कन्हैया! कितना कितना ओहह! कितना .... है - तुमसे दूर रहने में

कन्हैया! तु कौन है रे! तु क्या है रे!

ऐसो है मेरो प्रियतम!

"Vibrant Pushti"

कैसा है रे कान्हा तु

एक बार तेरा नाम धारण कर लिया तो तु मेरा हो गया

एक बार तेरा धाम पहुँच गया तो तुने मेरा घर बसा लिया

एक बार तेरा दर्शन कर लिया तो तुने तिरछी नजर से अपना बना लिया

एक बार तुझे पुकार लिया तो तुने मेरा हाथ थाम लिया

एक बार तेरा चरण स्पर्श कर लिया तो तुने गले लगा दिया

एक बार तुझे भूल गया तो तुने तेरी विरह रस की यादों में मुझे पागल कर दिया

ओहह मेरे कान्हा! निराली तेरी अदा!

"Vibrant Pushti"

कृष्ण तु क्यां नथी होतो

आम ज घुमतो भटकतो

कोई व्यक्ति मळे

तो ते स्नेही थई जतो

आम ज हरतो फरतो

कोई साथ मळे

तो ते साथी थई जतो

कृष्ण तु क्यां नथी होतो

नजर ज नजर फरकती

कोई नैन मळे

तो ते प्रेमी थई जतो

कृष्ण तु क्यां नथी होतो

याद थी याद गूँजती

कोई हिचकी मळे

तो ते आत्मीयता अनुभवतो

कृष्ण तु क्यां नथी होतो

"Vibrant Pushti"

कहीं तरह से सोच लगाई

कहीं तरह से स्मरण जगाई

कहीं तरह से याद संवारी

हे कान्हा! जो भी बिरहाई, मैं खुद को रोक न पाई

कहीं तरह से दर्शन लगाई

कहीं तरह से कीर्तन सुनाई

कहीं तरह से मनोरथ सजाई

हे कान्हा! जो भी पधराई, मैं खुद को लूटा न सका

कहीं रीत से आश बढाई

कहीं रीत से साँस उठाई

कहीं रीत से दास धराई

हे कान्हा! जो भी लूटाई, मैं खुद को स्पर्श न रंगाई

कैसा है यह जन्म

कैसा है यह जीवन

कैसा है यह जगत

हे कान्हा! जो भी रचाई, मैं खुद को कैसा खेल खेलाई

"Vibrant Pushti"
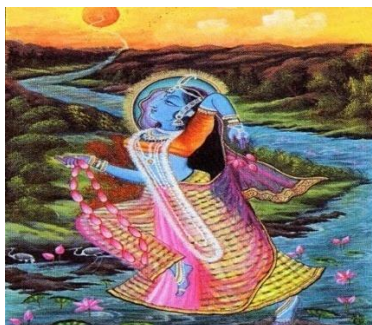
जो नैन में बसे
जो दिल में ठहरे
वो कहा जाये?
जो होठों पर बसे
जो धडकन में ठहरे
वो कहा जाये?
जो मन में बसे
जो आत्म में ठहरे
वो कहा जाये?
जो आँचल में बसे
जो बिंदिया में ठहरे
वो कहा जाये?
जो कंगना में बसे
जो पायल में ठहरे
वो कहा जाये?
अरे कान्हा! तु कैसे जायेगा?
हाँ! अगर तु मुझे तुझमें समाये
तो तु मुझमें से जायेगा
ऐसा करले!
तु चाहे वह करले
बस यही ही एक रीत है
जो तु मुझमें न ठहरेगा
कोई बात नहीं

मैं तुझमें ठहरुँगी

"Vibrant Pushti"

क्या होता है

कुछ होता है

किसके लिए होता है

कौन करता है

जो मन से खींचता है

जो तन से पुकारता है

जो नैन से निहालता है

जो धन से व्यवस्थापकता है

जो साँस से एक करता है

जो याद से निकट रहता है

जो अक्षर से जुडता है

जो स्वर से स्पर्शता है

ओ मेरे कृष्ण!

"Vibrant Pushti"

थाडे से खडा हूँ कबसे

न मैया यशोदा आयी

न प्रिय राधा आयी

झुके हुए नैन से

रुके हुए अधर से

न थकता हूँ इंतजार करते

न हारता हूँ बेकरार सोचते

वात्सल्य की रीत निराली

प्रीत की गति अमृतावली

थाडे से मुझे संवारे

आंतर विरहाग्नि से जगत संवारुँ

जन जन पुकारें हे साँवरिया!

पुष्टि प्रीत का स्पर्श अनोखा

हर स्पर्श से मैया पायी

हर साँस से प्रिया पायी

"Vibrant Pushti"

कैसे है रे नैन तेरे

जो हर नैनन से मुझे निहारे

कैसा है रे निहार तेरा

जो हर नजर से मुझे पुकारे

कैसी है पुकार तेरी

जो हर निगाह से मुझे संवारे

कैसा है संवारना तेरा

जो हर पलक से मुझे करारे

कैसा है करार तेरा

जो हर दृष्टि से मुझे एकरारे

"Vibrant Pushti"

हे इश्क!   क्या है तु? क्यूँ   है तु?

तेरे एक साँस से दिल पंकज हो जाता है

तेरे एक अश्क से धडकन पूजा हो जाती है

तेरे एक स्पर्श से आत्म ज्योत हो जाती है

तेरी एक नजर से नयन शरण हो जाता है

तेरी एक सोच से मन पागल हो जाता है

तेरी एक गूँज से रोम स्पंदन हो जाता है

सच मैं ऐसा साँवला हो गया हूँ

हर तरह से हर द्वार भटक रहा हूँ

"Vibrant Pushti"

पंखी बीन कैसे जीऊँ मैं

वह गाये गीत पिया मिलन में

यह है मुझे सिख बीन बादल गगन में

वनस्पति बीन कैसे जीऊँ मैं

वह बिछाये आँचल पिया मिलन में

यह है मुझे सिख वैरान रेगिस्तान में

पशु बीन कैसे जीऊँ मैं

वह निभाये साथ पिया मिलन में

यह है मुझे सिख पथराळ जमीन में

पिया मिलन में एक एक स्पंदन

हर जगाये हर संवारे पिया मिलन

यही मुझे प्रीत सिखाई आत्म जीवन में

"Vibrant Pushti"

नैनन के पलके बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की कीकी बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के बिंब बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की नजर बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के तीर बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की वाचा बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के इशारे बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की आतुरता बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के प्रश्न बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की व्याकुलता बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के उत्तर बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की वेदना बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के अश्रु बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की ज्योत बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के नर्तन बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की धारा बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के दर्पण बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की तस्वीर बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के दरवाजे बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की तकदीर बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के गीत बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की अपलकता बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के विरह बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की तृष्णा बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के मिलन बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन की प्रीत बोले कृष्ण कृष्ण

नैनन के चरण बोले कृष्ण कृष्ण

हे कृष्ण!   हे कृष्ण!   हे कृष्ण!

मेरे नैन तेरे दास कृष्ण

"Vibrant Pushti"

लूटाना इतना जो पानेवाला खद को लूटाना शिख जाय

तडपना इतना जो तडपाने वाला खुद तडपता जाय

पुकारना इतना जो सुनने वाला खुद झुमता जाय

भूलना इतना जो याद आने वाला खुद भूलो में खो जाय

"कान्हा" ऐसी है मेरी प्रीत

न कभी हमसे ....

"Vibrant Pushti"

कुछ तो है यह मन में

कुछ तो है यह तन में

कुछ तो है यह जीवन में

कुछ तो है यह वन में

कुछ तो है यह आँगन में

कुछ तो है यह सावन में

कुछ तो है यह गगन में

कुछ तो है यह चमन में

कुछ तो है यह कंगन में

कुछ तो है यह चरण में

कुछ तो है यह सजन में

कुछ तो है यह लगन में

कुछ तो है ....

प्रीत शरण में

"Vibrant Pushti"

निरखते निरखते मैं हो गई

निरखते निरखते मैं खो गई

निरखते निरखते मैं डूब गई

निरखते निरखते मैं भूल गई

निरखते निरखते मैं बन गई

निरखते निरखते मैं पा गई

सच! ऐसा है मेरा कान्हा

सच! ऐसा है मेरा साँवरिया

सच! ऐसा है मेरा गोविंद

सच! ऐसा है मेरा गोपाल

सच! ऐसा है मेरा श्याम

सच! ऐसा है मेरा प्रियतम

"Vibrant Puahti"

हे मोहब्बत की कसम

मोहब्बत की कसम

हे प्यार की कसम

प्यार की कसम

हे उल्फत की कसम

उल्फत की कसम

हे इश्क की कसम

इश्क की कसम

हे प्रीत की कसम

प्रीत की कसम

हे तेरी ही कसम

मेरी ही कसम

"Vibrant Pushti"

अति गहराई भरा प्रश्न करता हूँ

हमने "श्री कृष्ण" को देखा होगा

पर

"श्री राधा" को नहीं देखा होगा

हमने "श्री कृष्ण" को जाना होगा

पर

"श्री राधा" को नहीं जाना होगा

हमने "श्री कृष्ण" को समझा होगा

पर

"श्री राधा" को नहीं समझा होगा

हमने "श्री कृष्ण" को पहचाना होगा

पर

"श्री राधा" को नहीं पहचाना होगा

कितनी बार व्रज रज छूये

कितनी बार यमुना पान किया

कितनी बार गोवर्धन परिक्रमा की

कितनी बार कृष्ण चरित्रामृत गाया

पर

सच कहें

सिर्फ एक बार

"श्री पुष्टि प्रीत सेवा" छूयी

तो शायद "श्री राधा" को ....

छूप गया है प्यार

छूप गया है प्यार

नजरों से दूर है प्यार

नजरों से दूर है प्यार

ढूँढे कहाँ है प्यार

ढूँढे कहाँ है प्यार

छूप गया है प्यार.......

खुला आसमां बतादे तु

गहरा सागर उठादे तु

नहीं सितारों में झगमगाया तु

नहीं मौजों में लहराया तु

छूप गया है प्यार

छूप गया है प्यार

नजरों से दूर है प्यार

नजरों से दूर है प्यार

ढूँढे कहाँ है प्यार

ढूँढे कहाँ है प्यार

छूप गया है प्यार

छूप गया है प्यार......

उडती रज सुनादे तु

बरसती बूँदे झरझरादे तु

नहीं हवा में उडाया तु

नही बरसात में रिमझिमाया तु

छूप गया है प्यार

छूप गया है प्यार

नजरों से दूर है प्यार

नजरों से दूर है प्यार

ढूँढे कहाँ है प्यार

ढूँढे कहाँ है प्यार

छूप गया है प्यार

छूप गया है प्यार

"Vibrant Pushti"
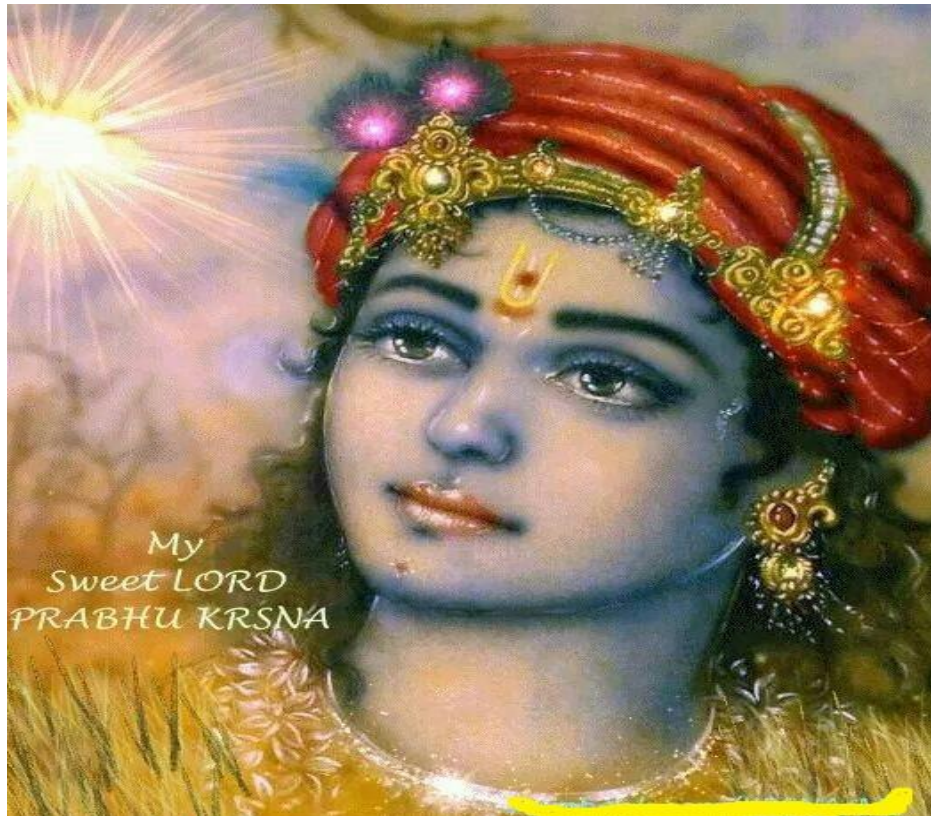
श्री कृष्ण को किसीने पुछा

हे कृष्ण! तुम्हें दु:ख और दर्द क्यूँ है?

मैं सहसा गया, मैं सहमा गया यह कैसा प्रश्न?

जो सर्वज्ञ से, जो सर्वत्र से, जो सर्वथा से आनंद है उन्हें दु:ख और दर्द कैसा?

जो सर्वज्ञ से, जो सर्वत्र से, जो सर्वथा से

सलामत है उन्हें दु:ख और दर्द कैसा?

जो सदा प्रीत से अखंड है

जो सदा सौंदर्य से अलौकिक है

जो सदा कला से प्रवीण है

जो सदा रस से मधुर है

उन्हें दु:ख और दर्द से क्या नाता?

ओहहह श्री वल्लभ!

सोच लो, समझ लो, जाग लो, पहचान लो।

"Vibrant Pushti"

हे साँवरिया!

तुझसे प्रीत करना कोई खुदगर्जी नहीं

तुझसे प्रीत करना कोई मजबूरी नहीं

तुझसे प्रीत करना कोई ख्वाहिश नहीं

तुझसे प्रीत करना कोई साजिश नहीं

करते है प्यार एक पतित से

करते है प्यार एक अतीत से

करते है प्यार एक अमित से

करते है प्यार एक अजित से

न कभी अपने बेदर्दी को जलाना

न कभी अपने बेखुदी को फसाना

न कभी अपने बेरुखी को सताना

न कभी अपने बेरहमी को तडपाना

क्यूँकि

है यहां कुछ पल पल ऐसा

है यहां कुछ मन मन ऐसा

है यहां कुछ तन तन ऐसा

है यहां कुछ धन धन ऐसा

प्रीत कियो है केवल तुमसे

नहीं कोई राह

तेरे दिल में बसने के सिवा

तुही तु है मेरे सजने के लिए

यमुना के तीर खडे

यमुना के नीर झांखे

यमुना के तीर छूये

यमुना के नीर दरशे

करे इंतजार प्रित के

प्रियतम पाने की आश

आजाओ श्याम निकुंज में

बुझाओ प्यास प्रीत चरण के

"Vibrant Pushti"
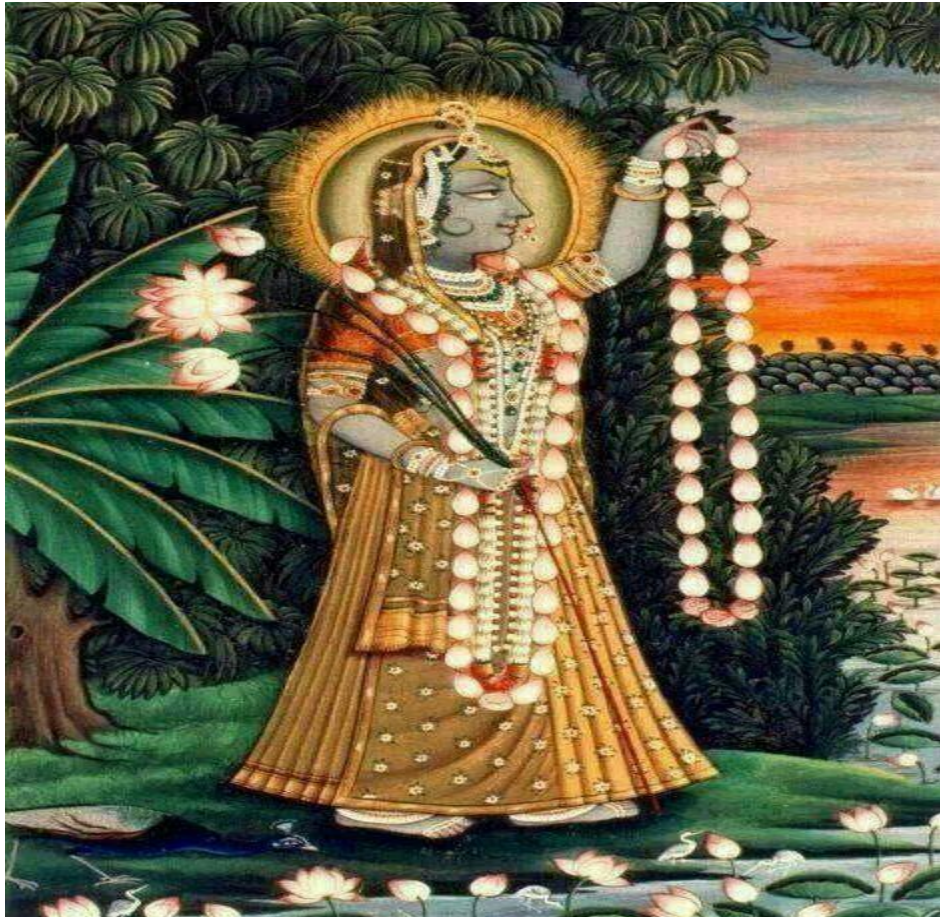
मेरे प्रिये! खडे है तेरे द्वार

ओ यमुना धीरे बहो

मेरे प्रिये! निहारे तोरे धार

ओ यमुना धीरे बहो

ऐसे तरसे ऐसे बरसे

जैसे बहती कालिंदी पुकार

ओ यमुना धीरे बहो

निकट कोई ढूँढे

निकट कोई बिछडे

जैसे बिन बादल बरसात

ओ यमुना धीरे बहो

नैन झुकाये साँस भरआये

जैसे प्रीत बिन प्रियतम

ओ यमुना धीरे बहो

"Vibrant Pushti"
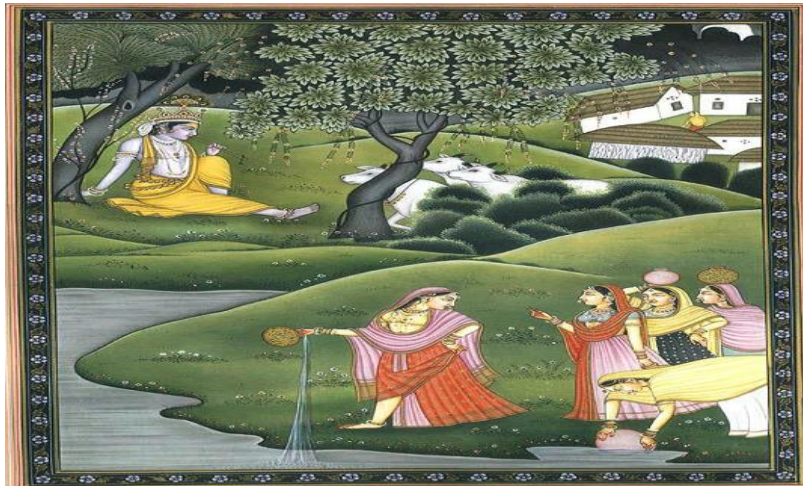
करे एहतराम प्रीत की

जो सदा निकट रहे

आज खेलों मेरी नयनों से

आज खींचो मेरे तन को

अपने तिरछे नजरों की चितवन से

मैं तुम्हारी हूँ

तुम मेरे रोम रोम में अपनी प्रीत भर दो

दिया है दर्शन मुझे

तुम अपने रंग रंग में रंगदो

हे कान्हा!

तुम तो श्याम हो

ओ प्यारे

तुम तो श्यामा हो

ओ न्यारी

मुझे तुमसा रंग न कोई भाये

ओ प्यारे

तुम तो श्याम हो

तेरे मुखडे पे मैं वारी वारी कान्हा

तेरे प्रीत रीत से मैं कछु नहीं श्यामा

तेर चितवन पे नयन हारी हारी गोपाला

तेरे अपलक नयन से प्रीत संवारी राधा

हटो जाओ

ओ मेरे कान्हा! मुझे और न लूटो

तुम तो श्याम हो

ओ प्यारे

तुम तो साँवली हो

ओ न्यारी

इतना जतादो मुझे कब तक यूँ ही रहना

जीतना वादा किया है प्रीत ने तब तक हमें मिलना

कब तक खडी रहूँ यूँ ही यमुना के तट पर

(मेरी पास यह प्रश्न का उत्तर नहीं है)

हटो जाओ

ओ मेरे कान्हा! मुझसे नटखट करने

तुम तो श्याम हो

ओ प्यारे

तुम तो प्रीत हो

ओ न्यारी

इतना कह दो मुझे तुम मेरे क्या हो

कैसे कह दूँ मेरी प्रीत चोर राधा को

हटो जाओ

ओ मेरे साँवरिया! मुझे और न सताओ

तुम तो श्याम हो

ओ प्यारे

तुम तो बावरी हो

ओ न्यारी

तुम तो श्याम हो

ओ प्यारे

तुम तो श्यामा हो

ओ न्यारी

मुझे तुमसा रंग न कोई भाये

ओ प्यारे

मुझे तुमसा संग न कोई भाये

ओ न्यारी

तुम तो श्याम हो

तुम तो श्यामा हो

तेरे मुखडे पे मैं वारी वारी कान्हा

तेरे प्रीत रीत से मैं कछु नहीं श्यामा

तेर चितवन पे नयन हारी हारी गोपाला

तेरे अपलक नयन से प्रीत संवारी राधा

हटो जाओ

ओ मेरे कान्हा! मुझे और न लूटो

तुम तो श्याम हो

ओ प्यारे

तुम तो साँवली हो

ओ न्यारी

इतना जतादो मुझे कब तक यूँ ही रहना

जीतना वादा किया है प्रीत ने तब तक हमें मिलना

कब तक खडी रहूँ यूँ ही यमुना के तट पर

(मेरी पास यह प्रश्न का उत्तर नहीं है)

हटो जाओ

ओ मेरे कान्हा! मुझसे नटखट करना

तुम तो श्याम हो

ओ प्यारे

तुम तो प्रीत हो

ओ न्यारी

इतना कह दो मुझे तुम मेरे क्या हो

कैसे कह दूँ मेरी प्रीत चोर राधा को

घट घट तरसना ऐसे पल पल बरसना तुझसे

साँसों की साँस लडी है हर जनम जनम से

हटो जाओ

ओ मेरे साँवरिया! मुझे और न सताओ

तुम तो श्याम हो

ओ प्यारे

तुम तो बावरी हो

ओ न्यारी

"Vibrant Pushti"

मेरी पल पल कान्हा साथ

हे साथियाँ मेरे

मेरी क्षण क्षण गोविंद पास

हे गोपाला मेरे

मेरी घडी घडी साँवरा निकट

हे साँवरिया मेरे

मेरा घट घट नंदलाला हार

हे नटखट मेरे

मेरा ....

मेरी प्रीत कृष्ण के द्वार

हे राधे मेरे

"Vibrant Pushti"
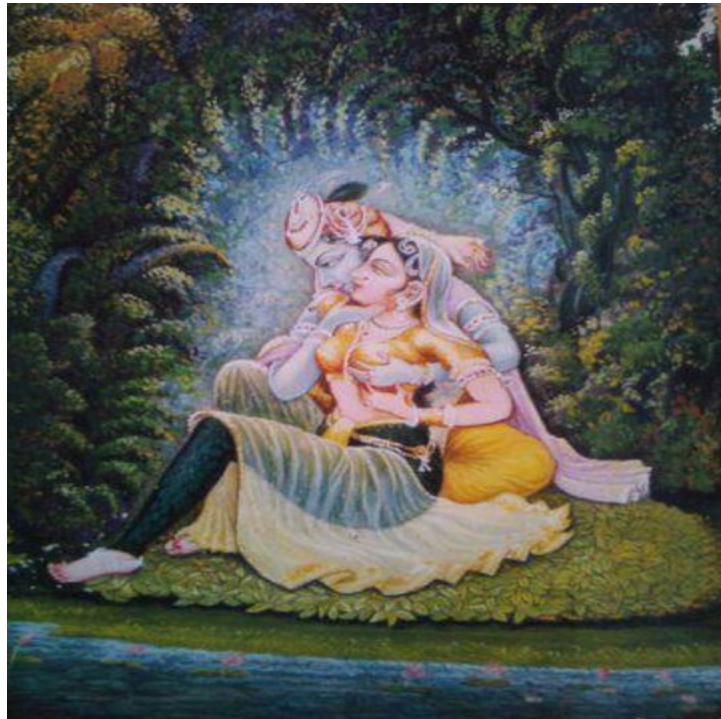
हरि सुंदर नंद मुकुंदा

हरि नारायण हरि ऑम

हरि केशव हरि गोविंदा

हरि नारायण हरि ऑम

वनमाली मुरलीधारी

गोवर्धन गिरिवर धारी

नित नित कर माखन चोरी

गोपि मन हारी

आओ रे कान्हा रे गोकुल के प्यारे

आओ रे नाचो रे रास रचा ओ रे

"Vibrant Pushti"

क्षण क्षण दूर न जाये

पल पल निकट ही आये

ऐसा है हमारा प्यार

हे श्याम!

कहाँ कहाँ तु आये मेरे साथ

कहीं कहीं से आये मेरे पास

कितने जन्म जन्म से हम रुठे

कितने ही इरादे से हम तुटे

है अब एकरार

है अब एतबार

कान्हा! हो हम तेरा प्यार

हाँ! कान्हा! हो हम तेरा प्यार

"Vibrant Pushti"

रंग काला अंग काला

काला मेरा सजन

घुंघराले काले घने जुल्फों से लिपटे

काले अंग से खिली काली प्रीत आँचलीया

ऐसी ओढाऊँ कलकी लहर चुनरिया

कजरारे काले नयन से छूटे तिरछी नजरिया

मेरे तन मन बसे काले घने घनश्याम

आजा साँवरिया आजा सखियाँ

खेले रंग रंग प्रीत होली

नींद नहीं आती पिया तेरे ख्याल में

सारी बातें करते रहते है पलकें नैनन से

क्या करें क्या कहें कहाँ कहाँ खोये नजर से

हे श्याम! हे साँवरे!

काजल बह गया काली काली रात में

कैसे कैसे ढूँढे सहारा तेरे प्यार में

"Vibrant Pushti"

कैसा रंग से रंगाऊँ तुम्हें
हर रंग में है हर एक रंग
मेरा रंग उनका रंग
उनका रंग किसीका रंग
हर रंग में है हर एक रंग
लाल रंग हरा रंग
पीला रंग नीला रंग
तु है हर रंग का एक रंग
कोई तुझे काला कहें
कोई तुझे साँवला कहें
हर रंग में है हर एक रंग
कोई तुझे श्याम कहें
कोई तुझे घनश्याम कहें
कैसे कैसे भाव रंग से पुकारें
तु है हर रंग का एक रंग
मेरा श्याम सलोना साँवरिया
तेरे ही रंग से सदा रंगाऊँ
मैं हूँ तेरे ही रंग की साँवली
हर पल होली हर पल रसिया
तेरे ही रंग से तेरे ही रंग से खेलुँ
ओ साँवरिया! तुझमें ही समा जाऊँ
"Vibrant Pushti"

रंग रंग रंग रंग रंग रंग रंग

रंग दे ओ मुझे रंग दे कान्हा मुझे रंग दे

ऐसी रंग दे की फिर मैं न संसार की हो

ऐसी रंग दे की फिर मैं न जगत की हो

कान्हा! मैं सिर्फ तेरी और तु मेरा

रंग दे मुझे रंग दे, रंग दे हे कान्हा!

जन्मों जन्म से तु ही मेरा साँवरा

साँसों साँस से मैं ही तेरी बावरी

न कभी दूर तुझ से न कभी दूर मुझ से

ऐसी है अपनी प्रीत ऐसी है हमरी रंगीनी

श्याम पिया मोरी ऐसी है जीवनीयाँ

"Vibrant Pushti"

"बिना रंगा के मैं तो घर नहीं जाऊँगी"

"बीत ही जाये मोरि सारी ऊँमरीया"

हे कान्हा!

जन्म पाया है तुम से रंग ने

जीवन पाया है तेरे रंग से रंग ने

लाल न रंगाऊँ मैं

हरा न रंगाऊँ मैं

रंगाऊँ साँवरे साँवले रंग में

रंगाऊँ प्यारे प्रीत के रंग में

श्याम पिया मोरि रंग दे चुनरियाँ

कृष्णा रंगाऊँ मैं

श्यामा रंगाऊँ मैं

राधा हो कर कृष्ण रंग में रंग दे

यमुना हो कर श्याम रंग में रंग दे

श्याम पिया मोरि रंग दे नजरियाँ

रंग दे कान्हा

रंग दे गिरधारी

रंग दे गोपाल

रंग दे मुरारी

श्याम पिया मोरि रंग दे अधरियाँ

श्याम पिया मोरि बांध दे पायलियाँ

रंग दे साँवरिया!

रंग दे कन्हाई!

तेरे ही रंग में रंग दे प्रियतम

तेरे ही रंग में रंग दे प्रीत रंग

श्याम पिया मोरि रंग दे विरह बूँद

"Vibrant Pushti"

रंग दे रंग दे हे कान्हा! मुझे रंग दे

तेरी रीत से तेरी प्रीत से

तेरी रीत से तेरी प्रीत से

मुझे रंगाना है केवल तेरी अदा से

क्यूँकि!

क्यूँकि!

तेरी अदा में है मेरे जीवन की रीत

हे कान्हा! मुझे रंग दे

रंग दे रंग दे हे कान्हा! मुझे रंग दे

तेरी आंखमिचौली से तेरी बाँसुरीयाँ से

तेरी आंखमिचौली से तेरी बाँसुरीयाँ से

मुझे लुटाना है तुझ पर केवल मेरा तन मन

क्यूँकि!

क्यूँकि!

तेरी प्रीत में है मेरे जन्मोजन्म के गीत

हे कान्हा! मुझे रंग दे

रंग दे रंग दे हे कान्हा! मुझे रंग दे

ओ मुझे रंग दे! ओ मुझे रंग दे!

"Vibrant Pushti"

हे साँवरिया!

तु न आया

ओहहह! तु न आया

होने लगी शाम रे

साँवरिया मैं खडी रही यमुना घाट रे

पिया! तकती रही निगाहें तेरी राह में

पिया! अपलक रही पलकें तेरी चाह में

दीप जलने लगे

ओहहह! दीप जलने लगे

मेरी आह में

साँवरिया मैं खडी रही यमुना घाट रे

तु न आया

ओहहह! तु न आया

होने लगी शाम रे

साँवरिया मैं खडी रही यमुना घाट रे

कैसे कैसे नजरों से छुपाती फिरुँ

कैसे कैसे ख्यालों से भगाती फिरुँ

दिल तडपने लगा

ओहहह! दिल तडपने लगा

तेरे मिलन में

साँवरिया मैं खडी रही यमुना घाट रे

तु न आया

ओहहह! तु न आया

होने लगी शाम रे

साँवरिया मैं खडी रही यमुना घाट रे

हे साँवरिया!

घडी घडी तरसे तेरे इंतजार की

बूँद बरसे बरसे तेरे विरह की

मुखडा प्रीत का दिखा

ओहहह! मुखडा प्रीत का दिखा

तेरे इशारे की

साँवरिया मैं खडी रही यमुना घाट रे

तु न आया

ओहहह! तु न आया

होने लगी शाम रे

साँवरिया मैं खडी रही यमुना घाट रे

साँवरिया मैं खडी रही यमुना घाट रे

साँवरिया मैं खडी रही यमुना घाट रे

हे साँवरिया!

"Vibrant Pushti"

साँवरे! ओ साँवरे!

यमुना किनारे तोरों गाँव

कैसे आऊँ तोरें पास

दूर दूर तोरों देश बसयो

मेरे मन के भीतर तु बसयो

कैसे आऊँ तोरें पास

बिच राह में गोवर्धन खडियो

बिच धार में काली नाग ठहरियो

कैसे आऊँ तोरें पास

जन्म जगत को फेरो पडयो

प्रकृति संसार को स्पर्श नडयो

कैसे आऊँ तोरें पास

ओ साँवरे! साँवरे!

साँवरे! ओ साँवरे!

आना है तोरें द्वार

पाना है तोरों संग

कैसे आऊँ तोरें पास

साँवरे! ओ साँवरे!

ओ साँवरे! ओ साँवरे!

"Vibrant Pushti"

कभी आप इनसे मिले हो जो खुद को लूटाना चाहे?

कभी आप इनसे मिले हो जो खुद को दूसरे में मिलाना चाहे?

"Vibrant Pushti"

कृष्ण गोविंद गोविंद गोपाल नंद लाल

गोपि गोविंद गोविंद प्रीत रंग श्याम डाल

हे कृष्ण गोविंद गोविंद गोपाल नंद लाल

गोपि गोविंद गोविंद प्रीत रंग श्याम डाल

श्याम गोविंद गोविंद श्यामा कर डाल

श्यामा गोविंद गोविंद कृष्ण कर डाल

हे श्याम गोविंद गोविंद श्यामा कर डाल

श्यामा गोविंद गोविंद कृष्ण कर डाल

कान्हा गोविंद गोविंद आजा बरसाना एक बार

खेल होली खेल मुझे तेरो रंग श्याम उडार

हे कान्हा गोविंद गोविंद आजा बरसाना एक बार

खेल होली खेल मुझे तेरो रंग श्याम उडार

कृष्ण गोविंद गोविंद गोपाल नंद लाल

गोपि गोविंद गोविंद प्रीत रंग श्याम डाल

साँवरे श्याम श्याम मिलले व्रज एक बार

राधा तडपे प्रीत विरह में बार बार

हे साँवरे श्याम श्याम मिलले व्रज एक बार

राधा पडपे प्रीत विरह में बार बार

राधा राधा राधा राधा राधा राधा

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण

राधा राधा राधा राधा राधा राधा

कान्हा कान्हा कान्हा कान्हा कान्हा कान्हा

श्यामा श्यामा श्यामा श्यामा श्यामा श्यामा

"Vibrant Pushti"

ख्यालों में मिले अकसर

ख्वाबों में छूये अकसर

विरह में डूबे अकसर

यादों में खोये अकसर

कैसे हम क्या है हम

ख्यालों में लूटे हम तुम

ख्वाबों में तरसे हम तुम

विरह में स्पर्शे हम तुम

यादों मे बरसे हम तुम

कैसी है यह उल्फत

हर रीत से मिलते है हम तुम

"Vibrant Pushti"

कृष्ण कृष्ण को सोप दिया

तो कृष्ण कृष्ण से आँख मिचौली क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से जोड दिया

तो कृष्ण कृष्ण से अधुरप क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से रंग दिया

तो कृष्ण कृष्ण से द्विरंग क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से वरण किया

तो कृष्ण कृष्ण से छल क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से अंश पाया

तो कृष्ण कृष्ण से रसहीन क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से धर्म संस्थापाया

तो कृष्ण कृष्ण से अधर्म क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से प्रीत जताई

तो कृष्ण कृष्ण से बेवफाई क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से रास रचाई

तो कृष्ण कृष्ण से अवैधता क्यूँ?

हे परब्रह्म! आपने मुझे जो भी जन्म - जीवन - संस्कार - संसार - सृष्टि - प्रकृति और ऋणात्मक संबंध दिये है वह निभाते निभाते पुरुषार्थ अविरत क्षण क्षण करता रहता हूँ, पर कभी कभी ऐसा विचार भी जागता है - यह कैसा जीवन?

साथ साथ ऐसा भी विचार जागता है - हे कृष्ण! तुम्हें भी ऐसा होता ही होगा तो तु कैसे धीरज और संयम रखता है तो मैं भी शांत हो जाता हूँ।

हे कृष्ण! क्या ऐसा ही जीवन है?

हर अंश ऐसे ही!

जाओगे जहां तुम नैनों से कहीं दूर

दिलसे कैसे जाएगी कान्हा प्रीत मधुर

हाथ छुडाकर भाग रहे हो कान्हा हम से दूर

पर बसी हुई धडकन की प्रीत से कैसे होंगे दूर

मेरी मृत्यु से मेरे नैन से जाओगे

मेरी मृत्यु से मेरे तन से जाओगे

मेरी मृत्यु से मेरे आँचल से जाओगे

मेरी मृत्यु से मेरे विरह से जाओगे

मेरी मृत्यु से मेरी धडकन से जाओगे

मेरी मृत्यु से मेरी साँसों से जाओगे

कान्हा मुझसे कही दूर

पर मेरे नैन की तस्वीर से कैसे जाओगे

पर मेरे तन की तडपन से कैसे जाओगे

पर मेरे आँचल की छाँव से कैसे जाओगे

पर मेरे विरह की आग से कैसे जाओगे

पर मेरे धडकन के सूर से कैसे जाओगे

पर मेरे साँस की उष्मा से कैसे जाओगे

कान्हा! बहोत कठिन राह है पनघट की

कैसे आओगे जमुना के तीर

जहां मैंने बसायी है प्रीत कुटीर

न चलेगी वहां गोलोक की रीत

न चलेगी वहां ब्रह्मांड की द्वित

न चलेगी वहां स्वर्ग की जीत

चलेगी चलेगी सिर्फ दिल की प्रीत

जो सदा गूँजती है सृष्टि के सृजन

चलेगी चलेगी सिर्फ मन की मित

जो सदा बसती है प्रकृति के संग

चलेगी चलेगी सिर्फ धडकन की गीत

जो सदा पुकारती है आनंद की धुन

कान्हा! संवर जा!

कान्हा! संभल जा!

कान्हा! जाग जा!

कान्हा! अब न भागना!

" Vibrant Pushti "

हर पल हर घडी हर क्षण

कहती रहे

आज जीने की तमन्ना है

आज मरने का इरादा है

यही थी हर पल हर घडी हर क्षण

राधा कृष्ण की

कभी मिलते है कभी बिछडते है

कभी मिलते थे कभी बिछडते थे

कभी साथ रहते है कभी अलगते है

कभी साथ रहते थे कभी अलगते थे

कभी पास रहते है कभी दूर रहते है

कभी पास रहते थे कभी दूर रहते थे

पर

न कभी बिछडते है न कभी बिछडते थे

न कभी अलगते है न कभी अलगते थे

न कभी दूर रहते है न कभी दूर रहते थे

हाँ!

राधा बरसाना रहती है कान्हा नंदगांव

राधा वृंदावन रहती है कान्हा गोकुल

राधा गहरवन रहती है कान्हा मधुवन

राधा व्रज रहती है कान्हा द्वारका

पर

वह दोनों सदा

आज जीने की तमन्ना है

आज मरने का इरादा है

अर्थात

सदा एक हो कर जीते है

सदा एक हो कर मरते है

जीते है - खुद में खुद की प्रीत बसा कर

मरते है - खुद में खुद को न्योछावर कर

राधा - खुद

कृष्ण - खुद

खुद - राधा

खुद - कृष्ण

जो खुद खुद में बस जाये

जो खुद खुद से न्योछावर जाये

वह अमृत हो जाते है

जो सदा जीते है - न कभी मरते है

इसलिए

आज जीने की तमन्ना है

आज प्रीति का इरादा है

आज भी हर पल हर घडी हर क्षण

राधा मुझमें है कृष्ण मुझमें है

कृष्ण मुझमें है राधा मुझमें है

राधा तुझमें है कृष्ण तुझमें है

कृष्ण तुझमें है राधा तुझमें है

राधा तुझमें है वह मुझमें है

कृष्ण तुझमें है वह मुझमें है

राधा मुझमें है वह तुझमें है

कृष्ण मुझमें है वह तुझमें है

यही ही है मधुर प्रीत मिलन की पराकाष्ठा

यही ही है मधुर प्रेम एकात्म की श्रेष्ठता

यही ही है मधुर प्रेमात्म आत्मा की पवित्रता

जो

सदा अमृत है

सदा प्रेमामृत है

सदा मधुरामृत है

" Vibrant Pushti "

क्यूँ दर्द होता है साँवरिया तुझसे

क्यूँ दर्द होता है?

न कोई बैर तुझसे

न कोई गैर तुझसे

प्रित करे तो रीत निभाये

फिरभी क्यूँ न चैन मुझमें

क्यूँ दर्द होता है साँवरिया तुझसे

क्यूँ दर्द होता है?

न कोई मांग तुझसे

न कोई व्यंग तुझसे

नित नित याद करके चाहे

फिरभी क्यूँ न रैन मुझमें

क्यूँ दर्द होता है साँवरिया तुझसे

क्यूँ दर्द होता है?

ऐसे पागल न करो श्याम

मुझसे दूर दूर न रहो श्याम

रीत सिखायी जो तुने हमें

खोये रहे पल पल तुममें

क्यूँ दर्द होता है साँवरिया तुझसे

क्यूँ दर्द होता है?

साँवरिया मेरे साँवरिया

मेरे साँवरिया मेरे साँवरिया

साँवरिया साँवरिया

साँवरिया मेरे साँवरिया

अब आजा मेरे द्वार मेरे साँवरिया

आजा आजा मेरे द्वार मेरे साँवरिया

तु न आये तेरी याद सताये

तु न पाये तेरी बिरह जताये

कैसी यह प्रीत जो चैन न आये

कैसी यह रीत जो शयन न आये

साँवरिया साँवरिया

साँवरिया मेरे साँवरिया

मेरे साँवरिया मेरे साँवरिया

साँवरिया साँवरिया

साँवरिया मेरे साँवरिया

अब आजा मेरे द्वार मेरे साँवरिया

यहां जहां साँवरे रंग निहालु

अंग अंग साँवरा संग मिलाऊ

कैसी यह गति जो ठहर न जाये

कैसी यह मति जो मुक्त न पाये

साँवरिया साँवरिया

साँवरिया मेरे साँवरिया

मेरे साँवरिया मेरे साँवरिया

साँवरिया साँवरिया

साँवरिया मेरे साँवरिया

अब आजा मेरे द्वार मेरे साँवरिया

" Vibrant Pushti "

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि राधे

"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

"Vibrant Pushti"

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "